INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

स्वतंत्र भारत में गृह विज्ञान विषय के माध्यम से स्त्री शिक्षा का विकास, योगदान एवं सशक्तीकरण - एक शोध अध्ययन

(Development, Contribution and Empowerment of Women's Education through Home Science in Independent India - A Research Study)

डॉ. प्रभा भारती
सहायक आचार्य (गृह विज्ञान)
साकेत गर्ल्स पी. जी. कालेज,
दहिलामऊ, प्रतापगढ़.

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link :: https://doi-ds.org/doilink/09.2026-95252341/IRJHIS2609016**

सारांश (Astract):

स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा ने सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा के विस्तार के साथ महिलाओं के लिए विभिन्न विषयों और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अवसर बढ़े। गृह विज्ञान उनमें से एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसने महिलाओं को स्वास्थ्य, पोषण, मानव विकास, वस्त्र एवं परिधान, संसाधन प्रबंधन तथा सामुदायिक विकास जैसे क्षेत्रों में ज्ञान एवं कौशल प्रदान किया।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य स्वतंत्र भारत में गृह विज्ञान विषय के माध्यम से स्त्री शिक्षा के विकास, उसके योगदान तथा महिला सशक्तीकरण में उसकी भूमिका का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में गृह विज्ञान शिक्षा के बदलते स्वरूप, रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर, स्वास्थ्य एवं पोषण जागरूकता, पारिवारिक निर्णय क्षमता तथा सामाजिक भागीदारी जैसे पक्षों को प्रमुखता दी गई है।

मुख्य शब्द : *स्त्री शिक्षा, गृह विज्ञान, महिला सशक्तीकरण, कौशल विकास, रोजगार, पोषण, स्वतंत्र भारत।*

प्रस्तावना :

भारत की स्वतंत्रता के बाद देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण आधार माना गया। इस प्रक्रिया में स्त्री शिक्षा को विशेष महत्व मिला। महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने से न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के अवसर बढ़े, बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में भी उनका योगदान बढ़ा।

गृह विज्ञान शिक्षा ने इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रारंभिक स्तर पर गृह विज्ञान को मुख्य रूप से परिवार एवं घरेलू जीवन से संबंधित विषय माना जाता था, लेकिन समय के साथ इसका क्षेत्र काफी व्यापक हुआ। आज गृह विज्ञान में खाद्य एवं पोषण, मानव विकास, वस्त्र एवं परिधान, संसाधन प्रबंधन, संचार एवं विस्तार शिक्षा तथा सामुदायिक विकास जैसे विभिन्न क्षेत्र शामिल हैं।

गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं को जीवनोपयोगी ज्ञान के साथ–साथ व्यावसायिक कौशल भी प्रदान करती है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा के विकास का अध्ययन करना।
2. गृह विज्ञान शिक्षा के विकास एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
3. स्त्री शिक्षा में गृह विज्ञान की भूमिका का अध्ययन करना।
4. गृह विज्ञान द्वारा महिलाओं में कौशल विकास का अध्ययन करना।
5. गृह विज्ञान एवं महिला सशक्तीकरण के संबंध का अध्ययन करना।
6. गृह विज्ञान से प्राप्त रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

1. स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा और स्त्री शिक्षा के विकास का अध्ययन करना।
2. गृह विज्ञान शिक्षा का विकास और गृह विज्ञान शिक्षा के स्वरूप का अध्ययन करना।
3. स्त्री शिक्षा और स्त्री शिक्षा में गृह विज्ञान की भूमिका का अध्ययन करना।
4. गृह विज्ञान और गृह विज्ञान द्वारा महिलाओं में कौशल विकास का अध्ययन करना।
5. गृह विज्ञान एवं महिला सशक्तीकरण का अध्ययन करना।
7. गृह विज्ञान एवं रोजगार स्वरोजगार के अवसरों का अध्ययन करना।

शोध परियोजना :

स्वतंत्र भारत में गृह विज्ञान विषय के माध्यम से स्त्री शिक्षा का विकास, योगदान एवं सशक्तीकरण – एक शोध अध्ययन

शोध की आवश्यकता :

इस शोध की आवश्यकता निम्न कारणों से है –

1. स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा के विकास को समझना।
2. गृह विज्ञान की बदलती भूमिका का अध्ययन करना।
3. महिलाओं के कौशल विकास में गृह विज्ञान के योगदान को जानना।
4. गृह विज्ञान एवं महिला सशक्तीकरण के संबंध को समझना।
5. रोजगार और स्वरोजगार में गृह विज्ञान की उपयोगिता का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के लिए इसकी उपयोगिता का अध्ययन करना।
7. वर्तमान समय में गृह विज्ञान की प्रासंगिकता को समझना।

अध्ययन की पृष्ठभूमि :

स्वतंत्रता के समय भारत में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नहीं थी। सामाजिक रूढ़ियाँ, आर्थिक कठिनाइयाँ, बाल विवाह, शिक्षा संस्थानों की कमी तथा महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी जैसी समस्याएँ मौजूद थीं।

स्वतंत्र भारत में सरकार और विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के प्रयास किए गए। धीरे–धीरे लड़कियों के लिए विद्यालय, महाविद्यालय और उच्च शिक्षा के अवसर बढ़े।

इसी क्रम में गृह विज्ञान शिक्षा ने महिलाओं को ऐसा शैक्षणिक क्षेत्र उपलब्ध कराया जिसमें उनके दैनिक जीवन से जुड़े विषयों के साथ आधुनिक वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक ज्ञान भी शामिल था।

गृह विज्ञान का अर्थ एवं स्वरूप :

गृह विज्ञान एक बहुविषयक शैक्षणिक क्षेत्र है। इसमें व्यक्ति, परिवार और समुदाय के जीवन को बेहतर बनाने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल का अध्ययन किया जाता है।

गृह विज्ञान के प्रमुख क्षेत्र :

- खाद्य एवं पोषण
- मानव विकास एवं परिवार अध्ययन
- वस्त्र एवं परिधान
- संसाधन प्रबंधन
- संचार एवं विस्तार शिक्षा
- सामुदायिक विकास

इन क्षेत्रों के कारण गृह विज्ञान का स्वरूप केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं रहा है।

स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा का विकास स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा के विकास को कई चरणों में समझा जा सकता है।

1. प्रारंभिक चरण स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की शिक्षा के विस्तार पर ध्यान दिया गया। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा तक लड़कियों की पहुँच बढ़ाने के प्रयास किए गए।
2. उच्च शिक्षा का विस्तार समय के साथ महिलाओं के लिए महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा के अवसर बढ़े। गृह विज्ञान भी उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण विषयों में शामिल हुआ।
3. व्यावसायिक शिक्षा गृह विज्ञान शिक्षा में व्यावसायिक और कौशल आधारित शिक्षा का महत्व बढ़ा। इससे महिलाओं को रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए।
4. आधुनिक चरण आज गृह विज्ञान को स्वास्थ्य, पोषण, फैशन, बाल विकास, शिक्षा, उद्यमिता, सामुदायिक विकास और संसाधन प्रबंधन जैसे व्यापक क्षेत्रों से जोड़ा जाता है।

स्त्री शिक्षा में गृह विज्ञान की भूमिका :

गृह विज्ञान महिलाओं की शिक्षा को व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी बनाने में सहायता करता है।

स्वास्थ्य एवं पोषण

खाद्य एवं पोषण का ज्ञान महिलाओं को संतुलित आहार, भोजन स्वच्छता तथा परिवार के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाता है।

मानव विकास

मानव विकास का अध्ययन महिलाओं को बच्चों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को समझने में सहायता करता है।

वस्त्र एवं परिधान

वस्त्र निर्माण, सिलाई, डिजाइनिंग और परिधान संबंधी कौशल महिलाओं के लिए रोजगार तथा स्वरोजगार का माध्यम बन सकते हैं।

संसाधन प्रबंधन

समय, धन और घरेलू संसाधनों का उचित प्रबंधन महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत कर सकता है।

सामुदायिक विकास

गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं को स्वास्थ्य, पोषण एवं विकास संबंधी गतिविधियों में सामुदायिक स्तर पर भाग लेने के लिए तैयार करती है।

स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा का विकास

स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा के विकास को कई चरणों में समझा जा सकता है।

1. प्रारंभिक चरण स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की शिक्षा के विस्तार पर ध्यान दिया गया। प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा तक लड़कियों की पहुँच बढ़ाने के प्रयास किए गए।
2. उच्च शिक्षा का विस्तार समय के साथ महिलाओं के लिए महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा के अवसर बढ़े। गृह विज्ञान भी उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण विषयों में शामिल हुआ।
3. व्यावसायिक शिक्षा गृह विज्ञान शिक्षा में व्यावसायिक और कौशल आधारित शिक्षा का महत्व बढ़ा। इससे महिलाओं को रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए।
4. आधुनिक चरण आज गृह विज्ञान को स्वास्थ्य, पोषण, फैशन, बाल विकास, शिक्षा, उद्यमिता, सामुदायिक विकास और संसाधन प्रबंधन जैसे व्यापक क्षेत्रों से जोड़ा जाता है।

गृह विज्ञान एवं महिला सशक्तीकरण महिला सशक्तीकरण का अर्थ महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और निर्णय लेने की क्षमता को मजबूत करना है। गृह विज्ञान शिक्षा निम्न प्रकार से महिला सशक्तीकरण में योगदान कर सकती है।

"गृह विज्ञान शिक्षा", "ज्ञान एवं कौशल", "आत्मविश्वास", रोजगार/स्वरोजगार", "आर्थिक आत्मनिर्भरता", "निर्णय लेने की क्षमता", महिला सशक्तीकरण", इस प्रकार गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं के व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति को मजबूत करने में सहायक हो सकती है।

गृह विज्ञान शिक्षा एवं रोजगार :

गृह विज्ञान की शिक्षा प्राप्त महिलाओं के लिए अनेक रोजगार क्षेत्र उपलब्ध हैं।

प्रमुख क्षेत्र

- पोषण एवं आहार विज्ञान
- शिक्षण (शिक्षा क्षेत्र)
- बाल विकास
- वस्त्र एवं परिधान निर्माण
- कपड़ा एवं परिधान उद्योग

- खाद्य उद्योग
- समुदाय विकास
- विस्तार शिक्षा
- गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) क्षेत्र
- उद्यमिता
- संसाधन प्रबंधन

इनके अतिरिक्त महिलाएँ सिलाई, बुनाई, खाद्य प्रसंस्करण, ब्यूटी पार्लर, होम मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में भी रोजगार प्राप्त कर सकती हैं।

गृह विज्ञान और आर्थिक आत्मनिर्भरता :

आर्थिक आत्मनिर्भरता महिला सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण आधार है। गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं को ऐसे कौशल प्रदान कर सकती है जिनका उपयोग वे नौकरी अथवा स्वरोजगार में कर सकती हैं। उदाहरण के लिए सिलाई एवं परिधान निर्माण के प्रशिक्षण से महिला घर से व्यवसाय शुरू कर सकती है। खाद्य प्रसंस्करण एवं पोषण संबंधी कौशल का उपयोग छोटे खाद्य व्यवसाय में किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा और कौशल का संयोजन महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिक सक्षम बनाने में सहायता कर सकता है।

गृह विज्ञान एवं परिवार का स्वास्थ्य :

परिवार के स्वास्थ्य में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। गृह विज्ञान शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ पोषण, भोजन स्वच्छता, स्वास्थ्य देखभाल तथा परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। विशेष रूप से खाद्य एवं पोषण शिक्षा के माध्यम से संतुलित आहार, भोजन चयन, खाद्य सुरक्षा और उचित भोजन योजना के बारे में जागरूकता विकसित की जा सकती है। इससे परिवार के स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महिलाओं की भूमिका मजबूत हो सकती है।

गृह विज्ञान एवं बाल विकास :

गृह विज्ञान का मानव विकास एवं बच्चों के विकास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ग्रामीण महिलाओं के लिए गृह विज्ञान की उपयोगिता :

ग्रामीण क्षेत्रों में गृह विज्ञान शिक्षा का विशेष महत्व हो सकता है। ग्रामीण महिलाएँ कृषि, पशुपालन, खाद्य संरक्षण, सिलाई, हस्तशिल्प और छोटे व्यवसायों से जुड़ सकती हैं।

यदि गृह विज्ञान शिक्षा को स्थानीय आवश्यकताओं और कौशल विकास से जोड़ा जाए, तो महिलाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं।

ग्रामीण महिला सशक्तीकरण के लिए गृह विज्ञान शिक्षा को स्वयं सहायता समूहों, कौशल प्रशिक्षण और उद्यमिता से जोड़ना उपयोगी हो सकता है।

आधुनिक समय में गृह विज्ञान का क्षेत्र लगातार विस्तृत हो रहा है। बदलती जीवनशैली, पोषण संबंधी समस्याएँ, परिवार संरचना में परिवर्तन, पर्यावरणीय चुनौतियाँ तथा रोजगार के नए अवसर गृह विज्ञान की प्रासंगिकता को बढ़ाते हैं।

आज गृह विज्ञान को केवल "घर चलाने" का विषय समझना उचित नहीं है। यह विज्ञान, स्वास्थ्य, मानव विकास, प्रबंधन, डिजाइन, संचार और सामुदायिक विकास से जुड़ा व्यापक क्षेत्र है।

शोध परिणाम

शून्य परिकल्पना Hå

1. स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा और स्त्री षिक्षा के विकास के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है
2. गृह विज्ञान शिक्षा का विकास और गृह विज्ञान षिक्षा के स्वरूप में कोई सार्थक अंतर नहीं है
3. स्त्री शिक्षा और स्त्री षिक्षा में गृह विज्ञान की भूमिका के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है
4. गृह विज्ञान और गृह विज्ञान द्वारा महिलाओं में कौशल विकास के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है
5. गृह विज्ञान एवं महिला सशक्तीकरणके मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है
6. गृह विज्ञान एवं रोजगारध् स्वरोजगार के अवसरोंके मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है

निष्कर्ष :

स्वतंत्र भारत में स्त्री शिक्षा का विस्तार भारतीय समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन का आधार बना है। गृह विज्ञान ने इस प्रक्रिया में एक उपयोगी शैक्षणिक माध्यम के रूप में योगदान दिया है।

गृह विज्ञान महिलाओं को स्वास्थ्य, पोषण, मानव विकास, वस्त्र एवं परिधान, संसाधन प्रबंधन और सामुदायिक विकास जैसे क्षेत्रों में ज्ञान एवं कौशल प्रदान करता है। इसके कारण यह विषय महिलाओं के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और व्यावसायिक विकास से जुड़ता है।

आज गृह विज्ञान का स्वरूप केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं है। यह एक व्यापक बहुविषयक क्षेत्र है, जिसमें रोजगार, स्वरोजगार, उद्यमिता और सामुदायिक विकास की अनेक संभावनाएँ मौजूद हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि गृह विज्ञान शिक्षा स्त्री शिक्षा को व्यावहारिक एवं कौशल–आधारित बनाने तथा महिला सशक्तीकरण की दिशा में योगदान देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. बेनामी, (1995)। राष्ट्रीय पोषण संस्थान, आईसीएमआर, हैदराबाद के राष्ट्रीय पोषण निगरानी ब्यूरो के 25 वर्ष। पृष्ठ 12।
2. अर्नोल्ड, फ्रेड, भिजा किम चो और टी.के. रॉय। (1998)। बेटा वरीयता, भारत में परिवार–निर्माण प्रक्रिया और बाल मृत्यु दर। जनसंख्या अध्ययन, 52 (3), 301–315।
3. अरोकेयासामी, पी. (2003)। लिंग वरीयता, गर्भनिरोधक उपयोग और फलस्वरूप क्षेत्रीय और विकास प्रभाव। जनसंख्या भूगोल का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल।
4. ऑइंगर, पैगी, ए.सी. कंजोरोस्की, जे.एम. हल्टरमैन, जे.एस. (2001)। आयरन की कमी और संयुक्त राज्य अमेरिका में स्कूली आयु वर्ग के बच्चों और किशोरों के बीच संज्ञानात्मक उपलब्धि। बाल रोग, 107, 1381–1336।
5. बाबा, एस.ए. राम, एम. राव, आर. और देवी, वी. (2002)। शहरी मलिन बस्तियों की किशोरियों की पोषण स्थिति और उनके पोषण संबंधी ज्ञान और प्रथाओं पर आईईसी का प्रभाव। इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी

मेडिसिन, 27 (4), 45।

6. बैरागी, राघेश्याम। (1986)। फूड क्राइसिस, न्यूट्रिशन, एंड फीमेल चिल्ड्रेन इन रूरल बांग्लादेश। जनसंख्या और विकास की समीक्षा, 12, 307।
7. बालगीर, आर.एस. (2007)। उड़ीसा, भारत में हीमोग्लोबिनोपैथी के विभिन्न जीनोटाइप के साथ शिशु मृत्यु दर और प्रजनन अपशिष्ट सहयोगी। मानव जीव विज्ञान के इतिहास, 34(1), 16–25।
8. आर. बालगीर। (2008)। भारत में विकास की गतिशीलता के संबंध में जनजातीय महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण पर लिंग पूर्वाग्रह का प्रभाव। द इंटरनेट जर्नल ऑफ बायोलॉजिकल एंथ्रोपोलॉजी, 2008, खंड 3, नंबर 1।
9. बामजी, एस.एम., राव, पी.एन. एंड रेड्डी, वी. (2003)। मानव पोषण की पाठ्यपुस्तक। ऑक्सफोर्ड आईबीएच प्रकाशन, नई दिल्ली, 149–178।
10. बराल, के.पी. और ओंटा, एस.आर. (2009)। नेपाल में किशोरों में एनीमिया की व्यापकतारू मोरंग जिला, नेपाल के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में एक समुदाय–आधारित अध्ययन। मेडिकल इंस्टीट्यूशंस ऑफ जर्नल, 11(3), 179–182।